जूट उत्पाद विविधीकरण एवं नई पीढ़ी के रेशों को बढ़ावा: आईसीएआर-निफ्ट द्वारा आर एंड डी प्रसार संगोष्ठी एवं एनएएफएम जागरूकता सत्र आयोजित

कोलकाता, 07 अगस्त 2026:

आईसीएआर-राष्ट्रीय प्राकृतिक रेशा अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईसीएआर-निनफेट), कोलकाता द्वारा शुक्रवार, 07 अगस्त 2026 को पाटसन भवन, कोलकाता के सभागार में जूट उत्पाद विविधीकरण योजना (JPDS) के अंतर्गत क्रियान्वित अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी) परियोजनाओं पर प्रसार संगोष्ठी तथा राष्ट्रीय जूट बोर्ड (NJB), वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के न्यू एज फाइबर मिशन (एनएएफएम) पर जागरूकता सत्र आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य JPDS के अंतर्गत किए गए आर एंड डी कार्यों के परिणामों का प्रसार करना तथा हितधारकों के बीच नई पीढ़ी के रेशों की संभावनाओं, अनुप्रयोगों एवं भविष्य की संभावनाओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना था, ताकि सतत विकास, आजीविका सृजन तथा प्राकृतिक रेशा क्षेत्र के विविधीकरण को बढ़ावा दिया जा सके।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. महादेव दत्ता, संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय जूट बोर्ड, ने न्यू एज फाइबर मिशन (एनएएफएम) के महत्व पर प्रकाश डाला तथा नई पीढ़ी के रेशों को बढ़ावा देने, तकनीकी प्रगति, विविधीकरण और रेशा एवं वस्त्र क्षेत्र के भविष्य पर इनके संभावित प्रभाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. डी.बी. शाक्यवार, निदेशक, आईसीएआर-निफ्ट, कोलकाता एवं विशिष्ट अतिथि, ने कृषक समुदाय से आधुनिक तकनीकों को अपनाने तथा उत्पादकता, मूल्य संवर्धन, सतत विकास एवं आजीविका के अवसरों को बढ़ाने के लिए नई पीढ़ी के रेशों के विविध अनुप्रयोगों की संभावनाओं का पता लगाने का आह्वान किया। उन्होंने युवाओं को आधुनिक कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों को रोजगार एवं करियर के संभावनापूर्ण क्षेत्र के रूप में अपनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी, नवाचार एवं विविधीकरण के समावेश से भारतीय कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं और इसका भविष्य उज्ज्वल है।

स्वामी कलेशानंद, विशिष्ट अतिथि, ने भारतीय कृषि में उभरती प्रवृत्तियों एवं कृषक समुदाय में विकसित हो रही कृषि पद्धतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कृषि की महत्वपूर्ण फसल के रूप में नई पीढ़ी के रेशों को अपनाने से जुड़ी संभावनाओं एवं चुनौतियों को रेखांकित करते हुए हितधारकों से सतत विकास एवं आजीविका सृजन के दृष्टिकोण से इन रेशों की संभावनाओं का आकलन करने का आग्रह किया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री संजय कुमार पाणिग्रही, प्रबंध निदेशक, जूट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (JCI) एवं मुख्य अतिथि, ने कृषक समुदाय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए देश के विकास में किसानों के योगदान की सराहना की। उन्होंने नई पीढ़ी के रेशों को अपनाने वाले किसानों को जूट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (JCI) द्वारा हरसंभव सहयोग एवं अवसर प्रदान करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

कार्यक्रम की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में 'शस्य श्यामला' कृषि विज्ञान केंद्र, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद एजुकेशनल एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, कोलकाता तथा आईसीएआर-निफ्ट, कोलकाता ने नई पीढ़ी के रेशों पर आधारित सतत वस्त्र उत्पादों के लिए सहयोगात्मक अनुसंधान, प्रसार गतिविधियों एवं व्यावसायीकरण हेतु एक समझौता ज्ञापन (MoU) करने में पारस्परिक रुचि व्यक्त की। प्रस्तावित सहयोग से ज्ञान के आदान-प्रदान, प्रौद्योगिकी प्रसार, क्षेत्र-स्तरीय हस्तक्षेप तथा नवीन प्राकृतिक रेशा-आधारित उत्पादों को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

कार्यक्रम के अंतर्गत एक तकनीकी सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें आईसीएआर-निफ्ट, राष्ट्रीय जूट बोर्ड (NJB), इंडियन जूट इंडस्ट्रीज' रिसर्च एसोसिएशन (IJIRA) तथा आईआईटी गुवाहाटी के वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों ने नई पीढ़ी के रेशों से संबंधित नवीन तकनीकों, अनुसंधान विकास एवं अनुप्रयोगों पर तकनीकी प्रस्तुतियां दीं। सत्र में उभरती प्रौद्योगिकियों, मूल्य संवर्धन, उत्पाद विविधीकरण तथा नई पीढ़ी के रेशों की संभावनाओं पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की गई तथा शोधकर्ताओं, उद्योग प्रतिनिधियों एवं अन्य हितधारकों के बीच ज्ञान-विनिमय एवं संवाद को बढ़ावा मिला।

कार्यक्रम में उद्योग प्रतिनिधियों, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं एवं प्रशासनिक अधिकारियों सहित लगभग 50 हितधारकों ने भाग लिया। विचार-विमर्श के दौरान शोधकर्ताओं, उद्योग प्रतिनिधियों, किसानों एवं अन्य हितधारकों के बीच संवाद के लिए एक महत्वपूर्ण मंच उपलब्ध हुआ। साथ ही, प्राकृतिक रेशा क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करने तथा नवीन तकनीकों के अंगीकरण एवं व्यावसायीकरण को गति देने पर विशेष जोर दिया गया।

संगोष्ठी का समापन सतत प्राकृतिक रेशों को बढ़ावा देने, किसान-उद्योग-अनुसंधान संस्थानों के बीच सहयोग को सुदृढ़ करने, युवाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने तथा सतत विकास एवं आजीविका सृजन के लिए नवीन रेशा-आधारित प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने की साझा प्रतिबद्धता के साथ हुआ।

(स्रोत: आईसीएआर-राष्ट्रीय प्राकृतिक रेशा अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, कोलकाता)

Promoting Jute Product Diversification and New Age Fibres: ICAR-NINFET Organises R&D Dissemination Seminar and NAFM Awareness Session

Kolkata, August 07, 2026:

The ICAR–National Institute of Natural Fibre Engineering and Technology (ICAR-NINFET), Kolkata, organised a **Dissemination Seminar on Research & Development (R&D) Projects implemented under the Jute Product Diversification Scheme (JPDS)** and an **Awareness Session on the New Age Fibre Mission (NAFM)** of the National Jute Board (NJB), Ministry of Textiles, Government of India, on Friday, August 07, 2026, at the Auditorium, Patsan Bhawan, Kolkata.

The programme aimed to disseminate the outcomes of R&D projects undertaken under JPDS and create awareness among stakeholders about the potential, applications and future prospects of new age fibres for sustainable development, livelihood generation and diversification of the natural fibre sector.

Addressing the gathering, **Dr. Mahadeb Dutta, Joint Director, National Jute Board**, highlighted the significance of the **New Age Fibre Mission (NAFM)** and elaborated on its role in promoting new age fibres, technological advancement, diversification and their potential impact on the future of the fibre and textile sector.

Dr. D.B. Shakyawar, Director, ICAR-NINFET, Kolkata and Guest of Honour, called upon the farming community to adopt modern technologies and explore diversified applications of new age fibres for enhancing productivity, value addition, sustainable development and livelihood opportunities. He also encouraged the youth to consider modern agriculture and allied sectors as promising career avenues. He emphasised that the Indian agriculture and allied sector offers immense opportunities and has a bright future, particularly with the integration of technology, innovation and diversification.

Swami Kaleshananda, Guest of Honour, enlightened the participants on the emerging trends in Indian agriculture and the evolving practices of the farming community. He also highlighted the opportunities as well as the challenges associated with the adoption of new age fibres as an important agricultural crop and encouraged stakeholders to assess their potential from the perspectives of sustainability and livelihood generation.

In his Presidential Address, **Shri Sanjay Kumar Panigrahi, Managing Director,** JCI and Chief Guest, expressed his gratitude to the farming community and reiterated the commitment towards supporting farmers in their efforts to contribute to the development of the country. He assured that the Jute Corporation of India (JCI) would extend all possible support and opportunities to farmers adopting new age fibres.

An important outcome of the programme was the expression of **mutual interest by 'Sasya Shyamala' Krishi Vigyan Kendra, Ramakrishna Mission Vivekananda Educational and Research Institute, Kolkata, and ICAR-NINFET, Kolkata**, towards entering into a **Memorandum of Understanding (MoU)** for collaborative research, extension activities and commercialization of sustainable textile products based on new age fibres. The proposed collaboration is expected to facilitate knowledge sharing,

technology dissemination, field-level interventions and promotion of innovative natural fibre-based products.

A **technical session** was also organised as part of the programme, wherein scientists and experts from **ICAR-NINFET, National Jute Board (NJB), Indian Jute Industries' Research Association (IJIRA), and IIT Guwahati** delivered technical presentations on various **innovative technologies, research developments and applications related to new age fibres**. The session provided valuable insights into emerging technologies, value addition, product diversification and the potential of new age fibres, while facilitating knowledge sharing and interaction among researchers, industry representatives and other stakeholders.

The programme witnessed participation of around 50 stakeholders, including representatives from industries, scientists, researchers and administrative officials. The deliberations provided an important platform for interaction among researchers, industry representatives, farmers and other stakeholders, with emphasis on strengthening collaboration and accelerating the adoption and commercialization of innovative technologies in the natural fibre sector.

The seminar concluded with a shared commitment towards promoting sustainable natural fibres, strengthening farmer-industry-research linkages, encouraging youth participation and advancing innovative fibre-based technologies for sustainable development and livelihood generation.

(Source: ICAR-National Institute of Natural Fibre Engineering and Technology, Kolkata)

Glimpses of the Event: